युवाओं के हाथ में तलवार नहीं कलम होनी चाहिये: सिद्धार्थ नागर

पवन प्रवाह
www.pawanprawah.com
e-mail-pawanprawah@gmail.com

website: www.pawanprawah.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
पवन प्रवाह

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

कुंभ-पर्व प्रयागराज का धार्मिक पक्ष

हम पूर्व अंक-3 मे विश्व के सबसे बड़े कुम्भ महोत्सव के बारे मे वैज्ञानिक कारणो को जानने हेतु एस.एम.एस. द्वारा गठित समूह व उसके अध्ययन के निष्कर्स तथा कुम्भ महोत्सव के धार्मिक पक्ष के विषय मे जानकारी प्राप्त की। इस अंक मे हम प्रयागराज तीर्थ स्थल के धार्मिक पहलू को जानने का प्रयास करेंगे।

भाग-04

गतांक से आगे

प्रयागराज में कुम्भ मेला-2013 का आयोजन

मेले व उत्सव प्राचीन काल से ही सम्पूर्ण भारत के सामूहिक जीवन के महत्त्वपूर्ण अंग रहे हैं। ये जनमानस के पूजा व आनन्द के लिए सांस्कृतिक घटनाओं के रूप में पवित्र अवसरों पर लगते हैं। भारत में इनकी अनगिनत संख्यायें हैं, इनमें कुम्भ पर्व सर्वाधिक प्रभावकारी स्नानपर्व है। इसे कुम्भ मेला या माघ मेला कहा जाता है। प्रयाग में गंगा, यमुना एवं अदृश्य सरस्वती के पवित्र संगम तट पर प्रतिवर्ष कुम्भ मेला, प्रत्येक छठे वर्ष अर्द्ध कुम्भ तथा बारहवें वर्ष पर महाकुम्भ मेला का आयोजन होता है। इस अवसर पर भारत के प्रत्येक कोने से असंख्य तीर्थयात्री जो भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते हैं, विभिन्न प्रकार के परिधानों में होते हैं, विभिन्न प्रकार के रीतिरिवाजों एवं संस्कृतियों वाले होते हैं, पवित्र जल में स्नान हेतु एक साथ एकत्रित होते हैं। कुम्भ मेला सम्पूर्ण हिन्दू संस्कृति का प्रतीक है। कुम्भ भारत का ही नहीं वरन् विश्व का सबसे बड़ा मेला है। यह पौष पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर महाशिवरात्रि तक एक माह से अधिक समय तक चलता है। सनातन धर्म की मान्यता है कि कुम्भ पर्व पर स्नान हेतु ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि तैंतीस करोड़ देवी-देवता पधारते हैं। उस समय गंगा नदी के पवित्र जल में स्नान करने से जीवन धन्य व मंगलमय हो जाता है। महाकुम्भ पर तीर्थ के पवित्र जल में स्नान का सर्वप्रथम अधिकार साधु-सन्तों के अखाड़ों का है। अखाड़ों के स्नान करने के क्रम का निर्धारण ब्रिटिश शासन द्वारा किया गया है जो आज भी यथावत चल रहा है। अखिल भारतीय साधु-संन्यासियों के कुल 13-अखाड़े हैं। इनके अन्तर्गत क्रमानुसार सभी स्नान करते हैं। दशनामी संन्यासियों के 7-अखाड़े हैं- निरंजनी, जूना, महानिर्वाणी, आनन्द, अग्नि, आह्वान और अटल। वैष्णवों के 3 हैं- निर्वाणी अनी अखाड़ा, दिगम्बर अनी अखाड़ा और निर्मोही अनी अखाड़ा। उदासीन सम्प्रदाय के दो अखाड़े- बड़ा उदासीन पंचायती अखाड़ा और नया उदासीन अखाड़ा। एक सिक्खों का शाही स्नान की शोभा यात्रा निकलती है, जो कुम्भ की शान है। गाजे-बाजे के साथ सभी सम्प्रदाय के लाखों सन्त भजन-कीर्तन करते हुए जुलूस के रूप में स्नान में जाते हैं, जिसमें अखाड़े के तथा खालसे के श्रीमहन्त-महामण्डलेश्वर एवं जगद्-गुरू रथादि पर सवार होकर छत्र-चंवर से सुशोभित होकर चलते हैं जो बड़ा ही आकर्षक लगता है। मेले के आयोजन के लिए संगम के समीप सुनियोजित कुम्भ नगर का निर्माण किया जाता है। वर्तमान शोध प्रबन्ध में इस सहस्राब्दि के प्रथम महाकुम्भ-2013 का वर्णन किया गया है। निम्नलिखित पंक्तियों से कुम्भ के महत्व, माहत्म्य और महत्ता का परिचय प्राप्त हो जाता है।

कुम्भ नगर का स्थानिक प्रतिरूप

पवित्र गंगा-यमुना एवं सरस्वती नदियों के संगम स्थल पर अल्पकालिक समय के लिए निर्मित कुम्भ नगर का विश्व मानचित्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह पवित्र कुम्भ नगर केवल अत्याधुनिक नगरीय अवस्थापनात्मक तत्वों से निर्मित नगर नहीं है बल्कि विभिन्न धर्मों का नगर है, विभिन्न संस्कृतियों का नगर है, विभिन्न भाषाओं का नगर है, विभिन्न वर्गों एवं वर्णों, सम्प्रदायों, पवित्रआत्माओं का नगर है। इसीलिए यह महाकुम्भ नगर है। देश के आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक विकास में भारतवर्ष का कोई भी नगर अथवा क्षेत्र प्रयाग के कुम्भ नगर की समानता नहीं कर सकता है। उपर्युक्त कविता से भी इसके माहात्म्य का बोध हो जाता है।

यह कुम्भ नगर अत्यन्त विशिष्ट है जो अल्प समय के लिए, नदियों के संगम स्थल के समीप, धार्मिक पवित्र नगर के रूप में निर्मित होता है तथा रेल, सड़क, नौगमन व वायुमार्ग द्वारा भारतवर्ष के ही नहीं बल्कि विश्व के सम्पूर्ण भागों से जुड़ जाता है। संचार क्रान्ति के कारण विश्व का सबसे महत्त्वपूर्ण नगर बन जाता है। यह नगर अल्प समय के लिए नगर के अत्याधुनिक सुविधाओं जैसे-दूरभाष, इन्टरनेट, स्टार होटल, विभिन्न प्रकार की दुकानों (जहां दैनिक से लेकर विलासिता युक्त वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है), चिकित्सा सुविधाओं, विशिष्ट सुरक्षा व्यवस्था आदि से युक्त होता है। कुम्भ नगर के स्थानिक प्रतिरूप के अन्तर्गत नगर की स्थिति एवं विस्तार, तीर्थयात्रियों की संख्या, यातायात या परिवहन तन्त्र, योजनाओं, सेवाओं एवं कार्यात्मक इकाइयों आदि तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

स्थिति-विस्तार

कुम्भ नगर की स्थित 25ए26श् अक्षांश उत्तर तथा 81ए50श् देशान्तर पूर्व में, गंगा-यमुना एवं अदृश्य सरस्वती नदी के संगम स्थल पर है। इस नगर की सीमाएं गंगा एवं यमुना नदी बनाती है परन्तु गंगा नदी के पश्चिम दिशा की ओर अर्थात् दारागंज की ओर कटान ज्यादा करने से इस कुम्भ नगर का विस्तार गंगा के पार पूर्व की ओर होता जा रहा है। इसके लिए गंगा नदी पर पीपे के अनेक पान्टुन पुल बनाये जाते हैं। जनवरी 2013 के महाकुम्भ नगर का विस्तार 1396 हेक्टेयर भूमि पर था। कुम्भ नगर के पूर्व में नई एवं पुरानी झूँसी, पश्चिम में इलाहाबाद शहर, उत्तर में फाफामऊ एवं दक्षिण में यमुना नदी तथा उसके पार अरैल एवं नैनी क्षेत्र हैं। इस कुम्भ नगर की समयावधि 9 जनवरी से आरम्भ होकर 21 फरवरी 2013 तक थी। इस नगर को नियोजित रूप से स्थापित करने का कार्य 3.4 माह पूर्व से आरम्भ हो जाता है।

(शेष अगले अंक में)

तीर्थ यात्रियों की संख्या

कुम्भ भारतीय संस्कृति का पुरातन महापर्व है। कुम्भ भारत का ही नहीं वरन् विश्व का सबसे बड़ा मेला है जहाँ एक ही समय, एक ही अवसर पर करोड़ों श्रद्धालु अमृत का पुण्य लेने के लिए उमड़ते हैं। इस कुम्भ नगर में सात करोड़ तीर्थयात्रियों ने विभिन्न अवसरों पर आकर संगम में स्नान, दान एवं कुम्भ नगर का दर्शन किया। कुम्भ नगर की जनसंख्या में दो तरह की जनसंख्या सम्मिलित है; प्रथम वे लोग जो कल्पवासी के रूप में स्थायी रूप से निवास कर सम्पूर्ण पर्वों के स्नान को किया और दूसरे वे जनसमुदाय जो विभिन्न अवसरों पर यहाँ आये। कुम्भ नगर में विभिन्न अखाड़ों के साधु-सन्त, नागाओं, कल्पवासियों, विदेशियों एवं प्रशासनिक व्यवस्था को संचालित करने वाले लोग सम्मिलित हैं। महाकुम्भ के प्रथम स्नान पर्व पौष पूर्णिमा को 40 लाख के लगभग, द्वितीय स्नान मकर संक्रान्ति पर 80 लाख से अधिक लोगों ने एवं तृतीय स्नान मौनी अमावस्या को तीन करोड़ (3 करोड़) लोग, चौथे स्नान वसंत पंचमी को एक करोड़ से अधिक लोग, पांचवे स्नान माघी पूर्णिमा को 70 लाख एवं अन्तिम स्नान महाशिव रात्रि को 45 लाख से ऊपर तीर्थ यात्रियों ने स्नान किया। इस प्रकार पूर माह कुम्भ नगर की जनसंख्या विश्व में सबसे बड़े नगर के रूप में रहती है। कुम्भ नगरी की जनसंख्या में कल्पवासियों का अलग ही संसार है। कुम्भ नगर में इनकी संख्या 50 हजार के लगभग रहती है। कल्पवासी लोग अपना घर छोड़कर यहाँ एक माह गंगा के किनारे रेत पर फैले शिविरों में रहते हैं। इनमें से कुछ कल्पवासी ऐसे हैं जो विभिन्न आश्रमों में रहते हैं। कल्पवासी यहाँ दस गुणे दस के शिविर, शौचालय और स्नान की सामूहिक व्यवस्था, एक समय भोजन, वह भी स्वयं और चूल्हे पर पकाना और ईश्वर भजन और प्रवचन सुनते हुए रहते हैं।

कुम्भ मेला के सन्दर्भ में ये पंक्तियाँ महत्त्वपूर्ण हैं-

कुम्भ भारत की सांस्कृतिक, महत्ता का मात्र दर्शन नहीं;
और न आध्यात्मिक सत्संग का, मात्र सम्मिलन स्थल है।
कुम्भ रंग-बिरंगी, बहुरंगी ध्वजाओं-तम्बू, डेरों, मंचों और मण्डपों का, मात्र पड़ाव नहीं;
और न ऋषियों, मुनियों, संतों, महात्माओं का, केवल समागम है।
कुम्भ मेला नहीं, ठेला नहीं, स्नान नहीं, ध्यान नहीं,
और न कुम्भ आलोचना, प्रत्यालोचना का ही विषय-वस्तु है।
कुम्भ है उद्घोष, भारत की एकता का।
कुम्भ है जयघोष-हमारी सांस्कृतिक अमरता का।
कुम्भ निमंत्रण है- गंगा, यमुना और सरस्वती का, कि आओं धो डालों मुझमें, अपने मन के सारे कलुष को- कथनी और करनी के कपट को।
सब छल बहा दो मेरी धारा में- तन मन निर्मल कर लो यमुना-गंगा की धारा में।
कुम्भ एकत्व है-कुम्भ समत्व है।
कुम्भ मानवता की अमरता का चिन्तन है।
कुम्भ हमारी धार्मिक सहिष्णुता का दर्शन है।
कुम्भ जयगान है, लोक चिन्तन का।
कुम्भ समवेत गान है, प्राणी के मंगल का।
सबको अपनाने का-कुम्भ अद्भुत दर्शन है।
भारत के भाल में कुम्भ कल्याण का चन्दन है।
कुम्भ का हृदय खुला, सदा सब के लिए- कोटि-कोटि मस्तक झुके, आज कुम्भ के लिए। ('कुम्भ' पं0 ललित कुमार बाजपेयी, उन्मुक्त, पृ0 33 श्री रामलीला स्मारिका 2000 से उद्धृत।)